RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-07
July-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

छत्तीसगढ़ राज्य में रेषम उद्योग के विकास हेतु संचालित शासकीय योजनाएँः एक अध्ययन

डॉ. मोना चौहान

सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) षास. काव्योपाध्याय हीरालाल महाविद्यालय अभनपुर, जिला – रायपुर

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 July 2019

Keywords
ककून, हितग्राही, तसर, मलवरी

***Corresponding Author**
Email: mona160675[at]gmail.com

ABSTRACT

रेशम, रसायन की भाषा में रेशम कीट के रूप में विख्यात इल्ली द्वारा निकाले जाने वाले प्रोटीन से बना तन्तु है इसका उपयोग वस्त्रों की बुनाई में किया जाता है। पूरे एशिया में केवल भारत ही एक ऐसा देश है जहॉ व्यावसायिक महत्व की चारो रेशम कीट प्रजातियाँ पाई जाती है। छत्तीसगढ़ राज्य की भौगोलिक स्थिति में तीन प्रकार के रेशम (टसर, मलवरी व ईरी) प्रजातियों का उत्पादन होता है यहाँ पर उत्पादित रेशम उच्च गुणवत्ता का होने के कारण राष्ट्रीय स्तर पर इसकी मांग अत्यधिक है अतः राज्य शासन द्वारा रेशम उद्योग के विकास हेतु कई याजनाएँ संचालित की गई है जिसके द्वारा अधिकतम मात्रा में रेशम उत्पादन कर ग्रामीण एवं अनुसूचित जाति व जनजाति के निर्धन परिवारों को स्वरोजगार प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है, टसर रेशम को बढ़ावा देने हेतु जशपुर जिले में विजन 2020 के तहत आगामी 5 वर्षो में 80 मेट्रिक टन यार्न की आपूर्ति प्रदेश में किया जाना है। इस हेतु फरसाबहार, कुनकुरी, कांसाबेल, दुलदुला विकास खण्ड में 20 क्लस्टर में नर्सरी में 14 लाख पौधे तैयार किये गए है ***वर्ष 2020 तक 24.36 करोड़ ककून उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है।*** *आगामी 5 वर्षो में लगभग 15000 परिवार प्रति वर्ष लाभान्वित होंगे। वर्तमान में छत्तीसगढ़ देश के झारखण्ड राज्य के बाद सर्वाधिक टसर उत्पादक राज्य है।*

परिचय :–

छत्तीसगढ़ राज्य अपने लघु एवं कुटीर उद्योग के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ का कोसा उद्योग अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान बनाने का प्रयास कर रहा है यह उद्योग पर्यावरण अनुकूल एवं कम पूंजी निवेश, सरल उत्पादन तकनीक से वृहद रोजगार प्रदान करने में सक्षम है। छत्तीसगढ़ के टसर रेशम की उच्च गुणवत्ता होने के कारण इसकी व्यावसायिक मांग अत्यधिक है। बस्तर, रायगढ़, बिलासपुर एवं चांपा जिले के वनों में कोसाफल प्राकृतिक रूप से अत्यधिक उपलब्ध है यहाँ नैसर्गिक एवं पालित दोनों ही पद्धतियों से कोसाफलों का उत्पादन किया जाता है। भारत में कुल चार प्रकार की रेशम प्रजातियाँ पाई जाती है। जिसमें से तीन प्रकार की रेशम प्रजाति टसर, मलवरी व ईरी का उत्पादन छत्तीसगढ़ में होता है। जिसमें तसर नैसर्गिक प्रजाति एवं मलवरी व ईरी पालित प्रजाति है। राज्य के वनों में रैली कोसा बहुतायत मात्रा में बस्तर संभाग में नैसर्गिक रूप से पाया जाता है जिससे सर्वोत्कृष्ट किस्म का कच्चा रेशम प्राप्त किया जाता है (लम्बाई 1500 से 1700 मीटर तक)

राज्य में रेशम गतिविधियों के विकास के लिये परियोजना दृष्टिकोण Soil to Silk की समस्त गतिविधियाँ शामिल की गई है जिसमें बिलासपुर संभाग में रेशम परियोजना एवं बस्तर इनोवेटिव प्रोजेक्ट स्थापित किये गए। ''विजन 2020'' के तहत कोसाफलो के उत्पादन 3.86 करोड़ रू. के व्यापार को 24.36 करोड़ रू. तक पहुचाने का लक्ष्य है।

अध्ययन का उद्देष्य

1. छत्तीसगढ़ राज्य में रेशम उत्पादन की वर्तमान स्थिति का अध्ययन
2. राज्य सरकार द्वारा रेशम उद्योग के विकास हेतु संचालित योजनाओं का अध्ययन

शोध प्रविधि :

राज्य शासन द्वारा चलाई जाने वाली योजनाओं के अध्ययन हेतु द्वितीयक समंको का प्रयोग किया गया है इसके लिये राज्य शासन द्वारा प्रकाशित राज्य की आर्थिक व सांख्यिकी संचालनालय द्वारा प्रकाशित पुस्तिका आर्थिक सर्वेक्षण 2018–19 एवं विभिन्न पत्र पत्रिकाओं का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन की सीमाएं – छत्तीसगढ़ शासन द्वारा रैली, डाबा एवं मलवरी रेशम के उत्पादन हेतु चलाई जाने वाली रेशम योजनाओं का अध्ययन किया गया है तथा वर्ष 2012 से वर्ष 2019 तक के आंकड़ों का ही अध्ययन किया गया हैं

राज्य शासन द्वारा राज्य के ग्रामीण अंचलों में निवासरत पिछड़े अनुसूचित जाति एवं जनजातियों को स्वरोजगार प्रदान करने के उद्देश्य से विभिन्न योजनाएं

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संचालित की जा रही है प्रदेश में बस्तर, कवर्धा, रायपुर, बिलासपुर, सरगुजा, जशपुर, धमतरी तथा कोरबा जिले में साल वन खण्ड प्रचुर मात्रा में पाए जाते है जो कि रेशम कीट का प्रमुख खाद्य वृक्ष है। राज्य शासन का यह प्रयास है कि आवश्यकताओं के अनुरूप प्राद्योगिकी का विकास व हस्तांतरण के साथ कोसा उद्योग को नई ऊँचाइयों तक पहुचाया जाए। प्राचीन काल से ही राज्य में टसर कृमि पालन परम्परागत रूप से किया जा रहा है राज्य शासन द्वारा संचालित योजना के माध्यम से वृहद मात्रा में उत्पादन करने का प्रयास किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ में दो प्रकार के रेशम प्रजातियों टसर (प्राकृतिक व पालित) एवं मलबरी का उत्पादन किया जाता है इस हेतु राज्य में निम्न योजनाएं संचालित है।

1. पालित डाबा टसर ककून उत्पादन योजना –

यह योजना बिना पूंजी निवेश के हितग्राहियों को लाभान्वित करती है ऐसे कृषक जिनकी स्वयं की भूमि पर पर्याप्त मात्रा में टसर खाद्य पौधे उपलब्ध है इस योजना को अपनाकर स्वरोजगार प्राप्त कर सकते है प्रदेश में उपलब्ध साजा–अर्जुन के टसर खाद्य पौधों पर टसर कीट पाले जाते है। रेशम विभाग द्वारा स्वस्थ डिम्ब समूह रियायती दर पर 4. 00 प्रति स्व समूह (अंडे) की दर से प्रति कृषक को 100 स्वस्थ डिम्ब समूह उपलब्ध कराया जाता है जिससे कृषक वर्ष में तीन फसल उत्पादित कर सकता है प्रत्येक फसल में 8000 से 10,000 टसर कोसा का उतपादन संभावित होता है जिससे कृषक 500 रू. से 3000 प्रति हजार मूल्य कृषकों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। उक्त योजना राज्य के 27 जिलों में संचालित है जिसके अन्तर्गत 407 टसर केन्द्रों एवं नवीन (राजस्व/वन भूमि) विस्तार केन्द्र तथा चिन्हांकित वन क्षेत्रों में कियान्वित की जा रही है। वर्ष 2017–18 में पालित डाबा टसर ककून का प्रस्तावित लक्ष्य 1024.14 लाख नग के विरूद्ध मार्च 2018 तक (830.523 लाख नग रेशम विभाग द्वारा 21.02 लाख नग एन.जी.ओ. द्वारा) कुल 851.543 लाख नग पालित टसर ककून का उत्पादन किया गया। जिससे मार्च 2018 के अन्त तक कुल 34117 हितग्राही लाभान्वित हुए है।

वर्ष 2018–19 में कुल 1050.278 लाख नग पालित कोसा का उत्पादन लक्ष्य प्रस्तावित है तथा 35167 हितग्राही को लाभान्वित करना है, जिसके विरूद्ध माह सितम्बर 2018 तक कुल 173.230 लाख नग कोसा उत्पादन किया गया जिससे 13297 हितग्राही लाभान्वित हुए। कृमि पालन कार्य प्रगति पर है।

विगत वर्षों में पालित टसर, ककून का उत्पादन

क्रं.	विवरण	इकाई	2012–13	2013–14	2014–15	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19
1	पालित टसर	लाख नग में	581.443	586.026	634.780	769.367	874.002	851.543	173.230
2	लाभान्वित हितग्राही	संख्या	20872	18493	22525	34587	33639	34117	13297

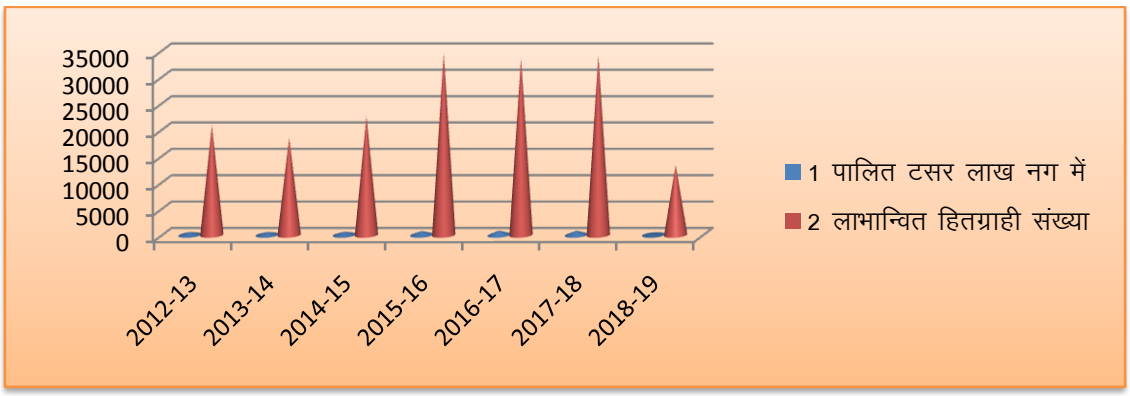

2. नैसर्गिक बीज प्रगुणन एवं कोसा संग्रहण योजना –

रेशम विभाग द्वारा उत्पादन बढ़ाने के लिये ''रैली कोसा का सघन विकास कार्यक्रम चलाया जा रहा है राज्य के जगदलपुर, दक्षिण बस्तर दंतेवाड़ा, उत्तर बस्तर कांकेर, कबीरधाम, रायपुर, धमतरी, राजनांदगांव, दुर्ग, कोरबा, कोरिया, अंबिकापुर, जांजगीर जिलों में नैसर्गिक बीज प्रगुणन कार्यक्रम साल, साजा, सेन्हा, धौवड़ा, अर्जुना, बाहुल्य वन खण्डो में किया जाता है। वर्ष 2017–18 में नैसर्गिक ककून का प्रस्तावित लक्ष्य 1215.27 लाख नग था जिसमें माह सितम्बर 2017 तक कुल 1146.950 लाख नग उत्पादन किया गया जिससे 28025 हितग्राही लाभान्वित हुए।

विगत वर्षों में नैसर्गिक ककून का उत्पादन

क्रं.	विवरण	इकाई	2011–12	2012–13	2013–14	2014–15	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19 सित. 18
1	लगाए गए कैम्प	संख्या	83	138	164	72	168	224	590	53

RRIJM 2015, All Rights Reserved

2	नैसर्गिक ककून उत्पादन	लाख नग	1636.27	1999.77	2048.41	657.86	693.82	1110.16	1975.802	320.947
3	लाभान्वित हितग्राही	संख्या	52366	62869	83866	21469	29042	44009	46386	8115

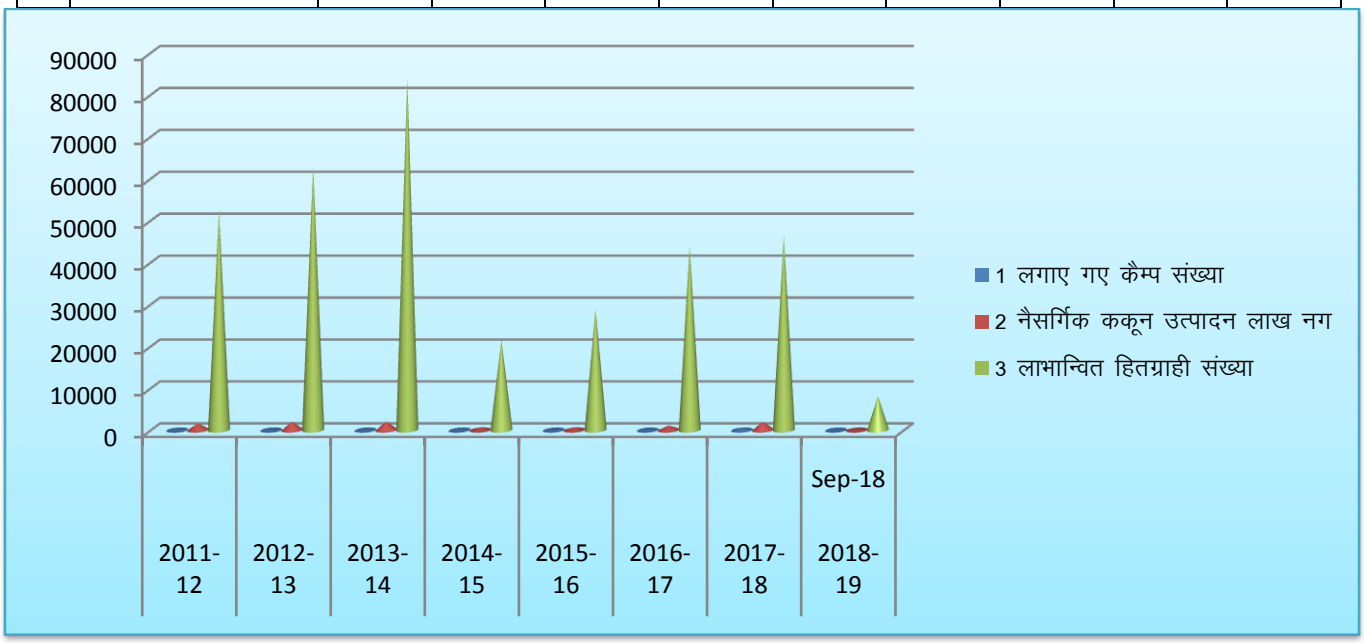

वर्ष 2018–19 में नैशर्गिक ककून का प्रस्तावित 2074.00 लाख नग कोसा का लक्ष्य प्रस्तावित है। जिससे 73125 हितग्राही लाभान्वित होंगे। माह सितम्बर 25018 तक अनुमानित कुल 320.947 लाख कोसा का संग्रहण हुआ जिससे 8115 अनुमानित हितग्राही लाभान्वित होंगे।

3. टसर धागाकरण योजना –

इस योजना के अन्तर्गत गुणवत्ता एवं मात्रात्मक उत्पादन वृद्धि से संबंधित नवीन तकनीकी विधाओं की जानकारी व प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रदेश के विभिन्न जिलों में 2007 रीलिंग एवं स्पीनिंग मशीन प्रदाय की गई है। योजना के अर्न्गत 183 महिला स्व–सहायता धागाकरण समूह कार्यरत है।

विगत वर्षों में रॉ–सिल्क एंव रपन सिल्क का उत्पादन विवरण

क्रं.	विवरण	इकाई	2012–13	2013–14	2014–15	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19
1	टसर रा–सिल्क एंव रपन धागा	मि. टन	387.183	394.715	226.788	254.168	353.13	522.892	90.190

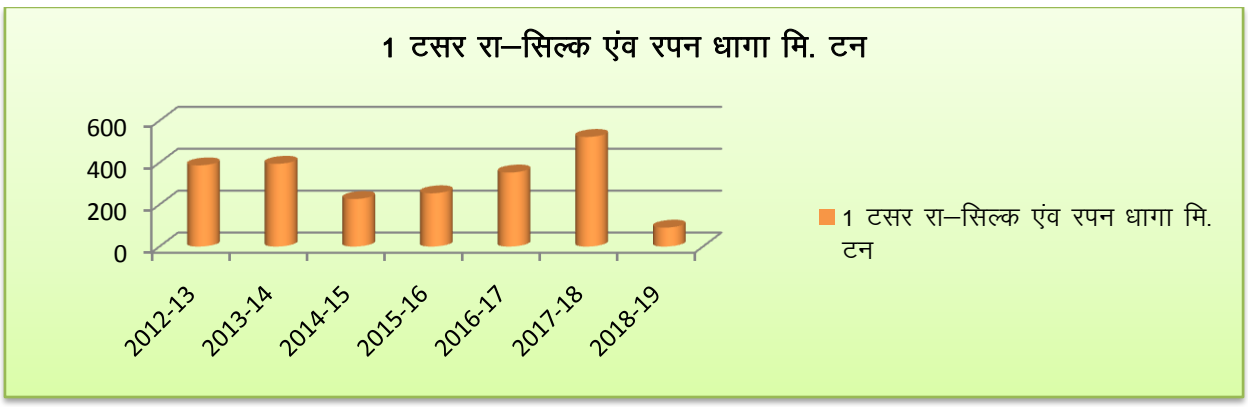

मलबरी रेशम विकास एवं विस्तार योजना –

राज्य में 74 रेशम केन्द्र/रेशम बीज केन्द्र, 11 ककून बैंक, 04 यार्न बैंक संचालित है। वर्ष 2018–19 में 72600 किलोग्राम मलबरी ककून का उत्पादन लक्ष्य रखा गया है जिससे कुल 3184 हितग्राही को लाभान्वित करना प्रस्तावित है। जिसमें से माह सितम्बर 2018 तक कुल 15100 किलोग्राम कोसा का उत्पादन किया गया है। जिससे कुल 1840 हितग्राही लाभान्वित हुए है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

विगत वर्षों में पालित मलबरी ककून का उत्पादन

क्रं.	विवरण	इकाई	2012–13	2013–14	2014–15	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19
1	मलबरी ककून उत्पादन	कि.ग्रा.	54488	64911	66278	68918	60501	68639	15100
2	लाभान्वित हितग्राही / श्रमिक	संख्या	2297	2596	3457	3242	2675	2936	1840

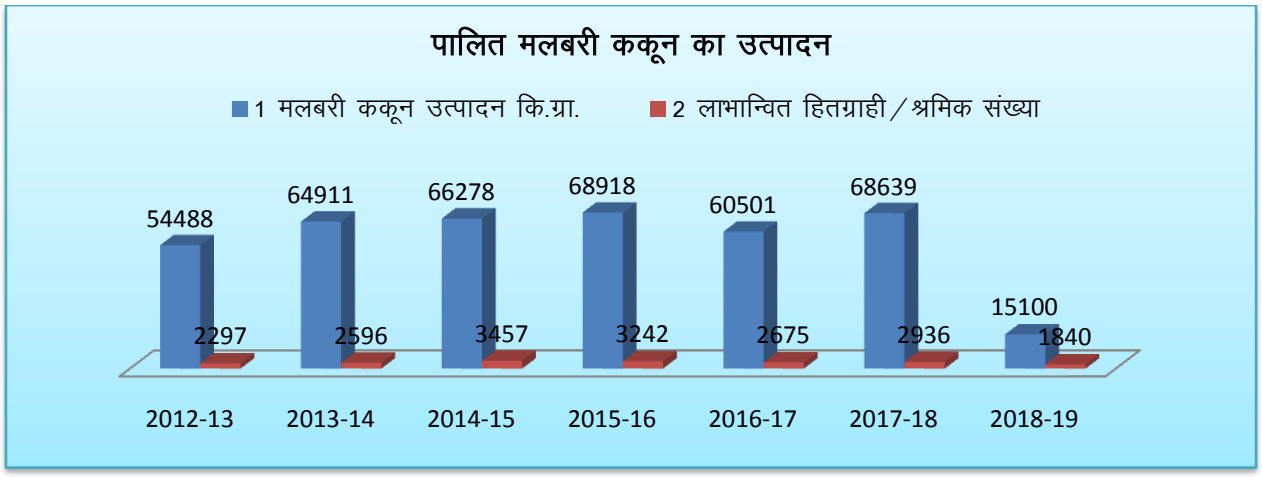

निष्कर्ष –

रेशम प्रभाग द्वारा संचालित समस्त योजनाओं के माध्यम से वर्ष 2016–17 में कुल 80331 हितग्राहियों को लाभान्वित किया गया। वर्ष 2017–18 में 81061 हितग्राहियों को लाभान्वित करने का लक्ष्य रखा गया है। नई तकनीक और वैज्ञानिक अनुसंधान के साथ रेशम विभाग द्वारा खाद्य पौधारोपण और कोसा फलों का उत्पादन तथा उन्नत धागाकरण मशीनों के माध्यम से धागा उत्पादन का कार्य करते हुए इस उद्योग को एक नई ऊँचाई तक पहुचाया गया इस कार्य से ग्रामों में रहने वाले ग्रामीण महिलाओं एवं पुरूषों को अपने आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। वर्ष 2020 तक 24.36 करोड़ ककून उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। विजन 2020 के अन्तर्गत इस वर्ष 350 हेक्टेयर राजस्व एंव वन क्षेत्र में टसर खाद्य वृक्ष साजा एंव अर्जुन का रोपण किया जाएगा।

Reference

[1]. Rao Shankar K.V., Brahma K.C., Sahu R. (Nov 2007) development of Sericulture in Chhattisgarh : Challenges and Prospects. *Research Gate VL 46* page 14-17

[2]. Banerjee Shipra, Chaudhary Savita (Oct-Dec. 2017) Cocoon production contributing to silk handloom Industries of Chhattisgarh state. *Journal of Rural Development Review Vol-III No. 3*

[3]. T. Jermina, Shukla K. Sandeep., Achari K. Venu, Sahu K.R. (March 2014) Indian sericulture Industry with particular reference to Chhattisgarh. *International Journal of green and Herbal chemistry Vol – 3 No. 2* page 457-467

[4]. छत्तीसगढ़ का आर्थिक सवेक्षण वर्ष 2017–18, आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय छ.ग. नया रायपुर ।

[5]. C.G. Cost. nic.in>on going – projects – 0

[6]. csb.gov.in>index php>page221

[7]. mp gramodyogglobal.gov.in

[8]. hi.vikaspedia.in

RRIJM 2015, All Rights Reserved